श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
नवम्बर २००८ केवल वैयक्तिक परिचालन के लिये वोल्यूम–१ अंक–६

प्रिय भाईयों और बहनों,

एकोज़ इंडिया न्यूज़लेटर के वर्ष २००८ के अंतिम संस्करण में आपका स्वागत है। न्यूज़लेटर टीम के लिये, देश भर से हमारे मिशन के समाचारों को एकत्रित कर के आठ क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करना एक सफ़ल प्रयास रहा। अनुवाद करने वाली टीमों के पूर्ण सहयोग के बिना न्यूज़लेटर को समय पर जारी करना सम्भव नहीं हो पाता। समाचार पत्र के स्वयं सेवकों, ज़ोनल संयोजकों और ज़ोनल प्रभारियों के अपार उत्साह से ही हम निरंतर ढेरों निविष्टियां प्राप्त करते रहे हैं।

न्यूज़लेटर के नवम्बर अंक में मालिक की तमिलनाडु, चीन और आंध्र प्रदेश के दौरे की रिपोर्ट है। निबंध प्रतियोगिता, जिसे देश भर के बहुत से स्कूलों व कॉलेजों में आयोजित किया गया, प्रशिक्षण कार्यक्रम, ओपन हाउस सत्र तथा वी बी एस ई के कार्यक्रम इस अंक की मुख्य झलकियाँ हैं।

नवम्बर २००९ संस्करण के लिये संस्मरण भेजने की अंतिम तिथि १५ दिसम्बर २००८ है। कृपया अपने संस्मरण घटना की तस्वीरों के साथ अपने ज़ोनल प्रभारी के माध्यम से भेजें।

एकोज़ इंडिया न्यूज़लेटर टीम

मदुरई का दौरा

मालिक, तिरुची से सड़क मार्ग द्वारा रवाना हुए तथा ३० अगस्त को मदुरई आश्रम पहुंचे। तमिलनाडु में चेन्नई के बाद, मदुरई हमारा दूसरा बड़ा केंद्र है। यहाँ का आश्रम लगभग तीन एकड़ भूमि में बना हुआ है। सप्ताहांत में मालिक का सानिध्य पाने, मदुरई के दक्षिण में स्थित सभी केंद्रों से आये लगभग २००० अभ्यासी वहाँ के अर्ध स्थाई ध्यान–कक्ष में एकत्रित हुए। प्रतिनिधि कार्ड पर विषय छपा था– "मालिक के प्रेम में सराबोर"।

रविवार ३१ अगस्त को सत्संग के बाद, मालिक लगभग आधे घंटे तक धारा प्रवाह तमिल भाषा में बोले। जिसका विषय था पारिवारिक जीवन और आध्यात्मिकता। उन्होंने कहा औरतों को अपने पति का हाथ पकड़ना चाहिये लेकिन मालिक को अपने हृदय में रखना चाहिये। यदि पति और पत्नी दोनों सहज मार्ग में हों तो बहुत अच्छा है। एक सुखी और खुशहाल विवाहित जीवन जीने के लिये हमें तीन चीज़ों को स्वयं से दूर रखना चाहिये – क्रोध, शंका और ईर्ष्या। अंत में मालिक ने यह कहा कि हम में इस धरती पर मकान बनाने का जुनून नहीं होना चाहिये और हमें यह याद रखना चाहिये कि हमारा घर हमारे अंदर है।

मालिक कुछ समय के लिये यादों की गलियों में गये – मदुरई के विवाह कक्ष में जहाँ उनका विवाह सम्पन्न हुआ था तथा वालमजी मैन्शन जहाँ सत्संग हुआ करता था। जब भी मालिक टी टी के संस्था में अपने कार्यकाल के दौरान उनकी इस क्षेत्र के दौरे की यादों के बारे में बताते तो माहौल में उनकी पुरानी यादें जीवंत हो जातीं। मालिक कुछ देर के लिये विरुदनगर के पास चिन्नावलिकुलम आश्रम गये और स्थानीय अभ्यासियों के साथ समय बिताया। उन्होंने कहा,"मैं जब कभी भी यहाँ आता हूँ, अच्छे से सोता हूँ।" मालिक ने बाबूजी महाराज की विरुदनगर दौरे की पुरानी फ़ोटो एलबमों को भी देखा और एक बडी सी सामूहिक फ़ोटो में पुराने अभ्यासियों को पहचाना। वे यह जान कर उदास हो गये कि विरुदनगर में टी टी के संस्था से उनके बहुत से सहयोगी अब नहीं रहे।

हमेशा की तरह मालिक प्रतिदिन बहुत से अभ्यासियों से मिलने के लिये समय निकाल लेते और उनकी वैयक्तिक प्रार्थनाओं और समस्याओं को सुनते। ३ सितम्बर को मालिक ने वापिस चेन्नई के लिये उड़ान भरी।

चीन में मालिक का प्रथम ऐतिहासिक दौरा (१६–२३ सितम्बर,२००८)

मालिक शांघाई पुडोंग अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पहुंचे और अप्रवासन अनापत्ति करवाने (immigration clearance) के बाद जैसे ही वे कार में बैठे, उन्होंने कहा,"आखिरकार हम चीन में हैं।" स्थानीय अभ्यासियों तथा कुछ दूसरे देशों से आये चीनी अभ्यासियों का स्वागत दल मालिक का उत्सुकता से ग्रीन कोर्ट में इंतज़ार कर रहा था, जहाँ मालिक ठहरे थे। उन्होंने उसी वक्त एक सिटिंग के लिये कहा,"आओ, हम आतिशबाज़ी शुरु करें और बेजिंग ओलम्पिक्स की तरह मशाल जलायें।" उन्होंने पूछा कि क्या वहाँ उस कमरे में बैठे सभी लोग अभ्यासी हैं और फ़िर उसी वक्त कहा कि वैसे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता क्योंकि वे पूरे चीन को ट्रांसमिट करेंगे।

मालिक ने एक तीन दिवसीय सेमिनार का संचालन किया जिसका विषय था–"दिल की भाषा"। उन्होंने ४० अभ्यासियों के दल के साथ दृश्य देखने और खरीदारी करने के लिये कुछ समय निकाला। कभी–कभी वे भोजन के बाद खूब देर बात करते। चीन के बारे में बात करते हुए उन्होंने चीनी अभ्यासियों को आशीर्वाद दिया और आशा की कि अभी बोए गये बीज भविष्य में अच्छी फ़सल देंगे। उन्होंने खास तौर से कहा कि चीन में शांक्सी प्रदेश के ज़ियान शहर में सहज मार्ग का विकास शुरु होगा।

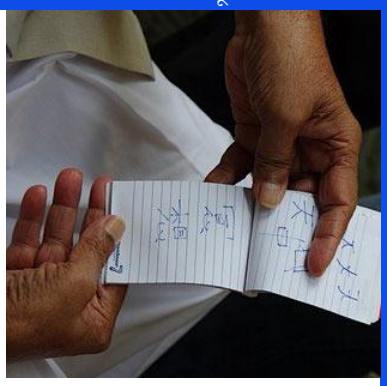

सेमिनार के लिए अपने संदेश में विशेष तौर पर चीनी लोगों को संबोधित करते हुये मालिक ने कहा –

हम स्वयं को राष्ट्र, धार्मिक समूह आदि से पहचानते हैं, भगवान ने यह भेद नहीं बनाये। भगवान ने मानव जाति और प्रेम के अलावा कुछ नहीं बनाया।

हम पहले इंसान बनें और फ़िर दूसरों को इंसान बनने में सहायता करें।

हम आपके सामने विकल्प रखने और जीवन में उस राह पर चलने में आपकी सहायता करने के लिये केवल यहाँ आये है तथा आपकी आंतरिक स्वतंत्रता को पुनः प्राप्त कराने, जोकि आप कहीं खो चुके हैं। सहज मार्ग स्वतंत्रता का रास्ता है।

"क्या हम वास्तव में उसके लिये काम करना चाहते हैं? उसके लिये यह गुण चाहिये – CAD वचनबद्धता (Commitment), अनुप्रयोग (Application) और दृढ़ निश्चय (Determination)"

पी. राजगोपालाचारी, चीन २००८

मालिक का हैदराबाद दौरा

मालिक, शनिवार ११ अक्तूबर २००८ को चेन्नई से यहाँ पहुँचे। आश्रम में हज़ारों अभ्यासियों ने उनका स्वागत किया जो कि कॉटेज से मुख्य द्वार तक शांत भाव से और अनुशासित खड़े थे। मालिक ने शाम को ध्यान–कक्ष में सत्संग करवाया।

अपने दौरे के दौरान मालिक आंध्र प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से आये अभ्यासियों से मिले और मिशन के बहुत से प्रशासनिक मामलों पर चर्चा की। उन्होंने ४ नये प्रशिक्षक बनाये। इस यात्रा के दौरान मालिक काफ़ी प्रसन्नचित्त लग रहे थे

१२ तारीख रविवार को सुबह सत्संग के बाद मालिक ने ३ विवाह सम्पन्न करवाये। उसके पश्चात मालिक ने यह कहते हुए एक वार्ता दी – मेरे काम के दो पहलू हैं – १. जिसकी मेरे गुरुदेव अनुमति देते हैं मैं उससे ज़्यादा नहीं कर सकता। २. जिसकी वे अनुमति दें उसे करने के लिये मेरे पास ताकत और इच्छाशक्ति होनी चाहिये। तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात है उस काम को होने देने में आपका सहयोग, ताकि आप उसका लाभ उठा सकें। सहयोग से मेरा मतलब है सहज मार्ग के दस नियम के अनुसार जीवन जीना, नियमित रूप से साधना करना, अनुशासन–आंतरिक और बाहरी, अनुशासन– भौतिक और आध्यात्मिक, अनुशासन घर में तथा बाहरी दुनिया में। इन सब से ज़्यादा अनुशासन आपके विचारों को नियंत्रित करने में, क्योंकि यहीं से सभी समस्याएं शुरु होती हैं।

रविवार दोपहर को १२५ प्रशिक्षकों, जो मुख्यतः आंध्र–प्रदेश के थे, की एक मीटिंग हुई। उसमें प्रशिक्षकों को मालिक के ८ अक्तूबर के संदेश तथा सुबह दी गई वार्ता पर विचार करने का अवसर मिला। फ़िर मालिक वहाँ आये, प्रशिक्षकों को सम्बोधित किया तथा सिटिंग दी।

मालिक ने शाम को सत्संग करवाया तथा एक दिन पहले वहाँ से जाने का फ़ैसला किया, यह कहते हुए कि उन्होंने अपना काम जल्दी समाप्त कर लिया है।

सोमवार को मालिक डोमलगुड़ा योगाश्रम के लिये रवाना हुये जहाँ वो ५ साल बाद जा रहे थे। मालिक ने शाम को सत्संग करवाया तथा रात को वे आश्रम में ही ठहरे। मंगलवार की सुबह मालिक, कोलकता के लिये रवाना हो गये।

नैतिकता और सदाचार

अन्ना यूनिवर्सिटी, चेन्नई

२१ अगस्त २००८ को चेन्नई की अन्ना यूनिवर्सिटी के परिसर में ६ विभागीय सदस्यों और इंजीनियरिंग, प्रिंटिंग टैक्नोलोजी विभाग के १२५ विद्यार्थियों के लिये २ घंटे के लिये वार्ता और संवादात्मक सत्र का आयोजन किया गया। भाई ए. पी. दुरई, संयुक्त सचिव, एस आर सी एम द्वारा दी गई वार्ता का विषय था – "नियति की ओर जाने का मार्ग नैतिकता और सदाचार से सरल बनता है।" उन्होंने इस विषय पर सहज मार्ग का दृष्टिकोण और मालिक द्वारा समय –समय पर दिये गये विचार प्रस्तुत किये – "नैतिकता न केवल तुम से बल्कि दूसरों से भी संबंध रखती है और सदाचार का संबंध सीधा तुम से है, ऐसा कुछ भी नहीं सोचना या करना चाहिये जो तुम्हारी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक व्यवस्था को नुकसान पहुँचाये।"

बहुत से विद्यार्थियों ने मालिक और मिशन से संबंधित प्रश्न पूछे और उन में से कुछ ने बाबूजी मेमोरियल आश्रम में जाने की इच्छा ज़ाहिर की। इस सत्र का आयोजन एक वरिष्ठ व्याख्याता श्री के विपिनेन्द्रन ने किया जोकि नये अभ्यासी बने हैं।

प्रकाशन – नये विमोचन

एक डी वी डी जिसमें तमिल में दी गयी दो वार्तायें हैं, को इस दिवाली पर जारी किया गया :

तिरुपुर में ध्यान–कक्ष का उद्घाटन
२ मार्च २००८ – २५ मिनट

मदुरई में दी गई वार्ता
३१ अगस्त २००८ – २० मिनट

आश्रय – वृद्धों के लिये घर

मालिक के आशीर्वाद से, इरोड में वृद्धों के लिये एक घर "आश्रय" का उद्घाटन किया गया जिसमें २५० अभ्यासी सम्मिलित हुये। एक अभ्यासी भाई के द्वारा इसे बढ़ावा दिया गया।

कार्यक्रम का आरम्भ सुबह ७ बजे तिरुपुर से कुछ अभ्यासियों के आने से हुआ। सत्संग के उपरांत कुछ भाईयों ने सहज मार्ग का समाज के प्रति दृष्टिकोण और वृद्धों की देखभाल आदि विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

सहभागी संग्रहणशील थे और हम सभी ने वहाँ बहुत अच्छे वातावरण और मालिक की उपस्थिति को महसूस किया।

अंतर्राष्ट्रीय शान्ति–दिवस

२१ सितम्बर को संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय शांति–दिवस को मनाने के लिये समूचे विश्व के केन्द्रों में प्रार्थना सत्रों का आयोजन किया गया। गुजरात में जिन स्थानों पर बुधवार का सत्संग होता है, वहाँ अभ्यासी भाई–बहनों के मित्रों एवं सहकर्मियों को भी आमंत्रित किया गया। प्रार्थना के उपरांत मालिक द्वारा २३ जुलाई को लखनऊ में दी गई वार्ता को सुनाया गया, जिससे आमंत्रित व्यक्तियों को– सहज मार्ग का लक्ष्य क्या है– इस के बारे में मालूम हुआ।

मंगलूर, कर्नाटक

२४ अगस्त को मंगलूर केन्द्र में भाई मोहनदास हेगड़े के द्वारा एक उच्च प्रशिक्षण सेमिनार का आयोजन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य मिशन को सही ढ़ंग से समझ कर अभ्यासियों का आध्यात्मिक विकास करना और साथ ही अभ्यासियों को मालिक की निरंतर आध्यात्मिक सहायता को पाते रहने के लिये प्रोत्साहित करना था।

मुख्य रूप से सहज मार्ग के मूल तत्वों की व्याख्या की गई जोकि नये और पुराने सभी अभ्यासियों के लिये लाभप्रद थी। भंडारों में उपस्थिति, मालिक के प्रति प्रेम तथा प्रार्थना की प्रभावोत्पादकता इत्यादि के बारे में बतलाया गया। मालिक की दुबई में अभ्यासियों के साथ की गई चर्चा की झलकियां (वीडियो क्लिपिंग) दिखाई गई जिसमें मालिक ने बतलाया है कि कैसे अवस्था (condition) उत्पन्न की जाये। जब कभी मालिक के द्वारा एक अभ्यासी में आनंदमय अवस्था उत्पन्न की जाती है तो उसे वो अवस्था को बार–बार याद करना चाहिये और जितनी देर हो सके उसे कायम रखना चाहिये।

कोडयकनाल, तमिलनाडु

मदुरई केन्द्र की टीम और कोडयकनाल के स्थानीय अभ्यासियों की मद्द से इस पर्वतीय स्थल पर सहज मार्ग को ले जाने का मिशन का प्रयास सफ़ल हो पाया है।

बृंदावन पब्लिक स्कूल में १२ सितम्बर को सहज मार्ग पर एक वार्ता का आयोजन किया गया। इसमें सहज मार्ग पद्धति, मिशन, मालिक, प्रक्रिया और व्यावहारिक रूप से इसके लाभ इत्यादि विषयों पर प्रकाश डाला गया। वहाँ के कुछ अध्यापकों ने मिशन से जुड़ने में रूचि दिखाई। प्रधानाध्यापक श्री मुन्ना सिंह जिन्होंने इस कार्यक्रम के आयोजन में बहुत सहयोग किया, ने अध्यापकों को जल्दी ही वी बी एस ई प्रशिक्षण देने की सहमति दी।

श्री जयेन्द्र सरस्वती कॉलेज, ग्रामीण विकास के एक शिक्षण संस्थान में दो दिन का एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। २६ सितम्बर २००८ को पहले दिन का कार्यक्रम वहाँ के १० विभागीय सदस्यों के लिये था। दूसरे दिन विद्यार्थियों के लिये सहज मार्ग पद्धति द्वारा ध्यान पर आयोजित एक सत्र में १०० विद्यार्थी सम्मिलित हुए। १५ विद्यार्थियों ने ध्यान आरम्भ करने की इच्छा व्यक्त की। इस कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय अभ्यासियों भाई प्रसाद और भाई वी. सी. राव द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

पनशेट रिट्रीट सेंटर, पुणे

४ और ५ अक्तूबर २००८ को पनशेट रिट्रीट सेंटर में आयोजित दो दिवसीय महाराष्ट्र एस आर सी एम यूथ कनवेंशन का विषय था – मालिक से निकटता बढ़ाना।

४० अभ्यासियों और एक सहायकों/सुकारकों की टीम के साथ रिट्रीट सेंटर का शांत वातावरण इस कार्यक्रम के लिये बिल्कुल उपयुक्त था। सहज मार्ग अभ्यास के मूलभूत तत्वों के अलावा मालिक से संबंध तथा सहज मार्ग के मशाल–वाहकों के रूप में युवकों की भूमिका आदि विषयों पर चर्चा की गई।

वार्ताओं के साथ फ़िल्में, पहेली, खेल, रोचक पावर प्वांयट प्रस्तुतियां, मालिक द्वारा दी गई वार्ताओं के उपयुक्त अंश तथा अभ्यासियों द्वारा पेश किया गया मधुर संगीत इस कार्यक्रम का हिस्सा थे। पुणे के अभ्यासियों द्वारा अच्छी देखभाल, खाने और रहने के अच्छे प्रबंध तथा प्रेम–भाव ने सहभागियों के लिये इसे एक यादगार अनुभव बना दिया।

गाज़ियाबाद, यू. पी.

२८ सितम्बर २००८ को आयोजित किये गये कार्यक्रम में २ वर्ष से कम समय से अभ्यास कर रहे लगभग ५० अभ्यासियों ने भाग लिया। वे गाज़ियाबाद, साहिबाबाद और नोयडा के रहने वाले थे। इस कार्यक्रम में सैद्धांतिक पहलुओं के बजाय सही और यथाविधि अभ्यास करने पर ज़ोर दिया गया।

सहभागियों ने यह महसूस किया कि साधना के आधारभूत तत्वों को सरल और प्रभावपूर्ण ढंग से समझाया गया। सतत स्मरण और सफ़ाई से संबधित बहुत सी शंकाएं जोकि पुस्तकें पढ़ने से भी स्पष्ट नहीं हुई थी, उन्हें स्पष्ट किया गया। इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम और ज़्यादा आयोजित किये जाने चाहिये, खास तौर पर नये अभ्यासियों के लिये।

जम्मू

२६ सितम्बर और ९ अक्तूबर को दो ओपन हाउस सत्र आयोजित किये गये। उनमें से एक जो जैनेसिस इंस्टीव्यूट ऑफ़ कोम्पिटीटिव स्टडीज़ (आई ए एस के लिये संस्था) में आयोजित किया गया उसमें २१–२५ वर्ष के आयु वर्ग के ३५ विद्यार्थियों ने भाग लिया। उन्हें सहज मार्ग को "जीने का एक संतुलित ढंग" के रूप में प्रस्तुत किया गया।

दूसरा ओपन हाउस एन एच पी सी के कर्मचारियों जोकि ४०–४५ वर्ष की आयु के थे, के लिये जम्मू से ९० कि. मी. दूर ज्योतिपुरम कस्बे में आयोजित किया गया। उन्हें सहज मार्ग को "आध्यात्मिकता में नई किरण" के रूप में प्रस्तुत किया गया।

दोनों कार्यक्रमों को अच्छी अनुक्रिया मिली। १५ सहभागियों ने साधना शुरु करने की इच्छा ज़ाहिर की।

हैदराबाद, आ. प्र.

रविवार, २८ सितम्बर २००८ को १२० नये अभ्यासियों, जिन्होंने पिछले एक वर्ष के दौरान अभ्यास शुरु किया था, के लिये एस आर नगर ध्यान–कक्ष में एक संवादात्मक कार्यशाला का आयोजन किया गया। सहभागियों को कक्षा पद्धति पर आधारित वार्ताओं की अपेक्षा संवादात्मक स्वरूप ज्यादा बेहतर महसूस हुआ।

सामूहिक चर्चाओं के विषय " वेल्कम टू सहज मार्ग " पुस्तिका से लिये गये थे। सभी विषयों पर एक खुले वातावरण में जहाँ अभ्यासियों को अपने विचार प्रस्तुत करने की पूरी स्वतंत्रता थी, काफ़ी देर तक चर्चा हुई। सत्र का समापन आडिओ सी डी "द प्रेक्टिस ऑफ़ सहज मार्ग" में मालिक के द्वारा दी गई वार्ता को सुनकर किया गया।

तिनसुकिया

१९ सितम्बर २००८ को तिनसुकिया आश्रम में ६४ अभ्यासियों के लिये और डिबरुगढ़ केन्द्र में १९ अभ्यासियों के लिये एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

भाई असोकसेन गुप्ता ने स्लाइड के द्वारा प्रस्तुतिकरण दिया। उन्होंने मालिक के शब्दों को दोहराते हुए कहा ,"मालिक के प्रति समर्पण की सारी बातें असत्य हैं। यह इतना आसान नहीं है। लेकिन मालिक को हमारे प्रति समर्पित करना आसान है, वह है, उनके कार्य में दिलचस्पी ले कर।"

बीदर, कर्नाटक में पूरे दिन का कार्यक्रम

रविवार, २१ सितम्बर को हमारे मिशन के संयुक्त सचिव भाई ए पी दुरई और उ. कर्नाटक के ज़ोनल इंचार्ज भाई राजू काशमपुरकर द्वारा बीदर में पूरे दिन के कार्यक्रम का संचालन किया गया। जिसमें बीदर, भालकी, थनकुशनूर और गुलबर्गा से लगभग ५० अभ्यासी शामिल हुये। सुबह के सत्संग के बाद एक चर्चा सत्र हुआ जिसमें सभी अभ्यासियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। चर्चा का विषय था–अपने केंद्रों में मिशन के विकास के लिये हम क्या योगदान दे सकते हैं। बहुत से अभ्यासियों ने अपने विचार प्रकट किये जिसमें ओपन हाउस और गृह–सभाओं के आयोजन से लेकर स्वयं का विकास करना ताकि हम रोल मॉडल बन कर अपने मिशन को प्रस्तुत कर सकें इत्यादि शामिल थे। दोपहर को मालिक की हबल–बबल श्रंखला से एक वार्ता सुनाई गई। कुल मिला कर यह एक अच्छा संवादात्मक सत्र रहा, बहुत कुछ सीखने के अनुभव से परिपूर्ण दिन ने अभ्यासियों में अपनी साधना को नये उत्साह से करने के जोश से भर दिया।

हैदराबाद मे मुल्याधारित शिक्षा कार्यक्रम की धूम

हैदराबाद मूल्याधारित शिक्षा केन्द्र, आध्यात्मिक मूल्यों के अभ्यास के लिये, अभ्यासियों व विद्यार्थियों की शिक्षा पर लगातार ध्यान दे रहा है।

जीवन में दृष्टिकोण और लक्ष्य निर्धारित करना जैसे विषयों पर उस्मानिया मेडिकल कालेज के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिये २२ अगस्त को ढ़ाई घन्टे का आदान–प्रदान करने वाला कार्यक्रम आयोजित किया गया। सब सहभागियों ने महसूस किया कि यह कार्यक्रम बहुत ही शिक्षात्मक, सूचनात्मक, स्पूर्तिवर्धक, दिल को छूने वाला व निर्मल करने वाला था।

सितंबर के दूसरे हफ़्ते मे एक टीम ने नंदयाल का दौरा किया और वहाँ के एस. पी. वाई. रेड्डी स्कूल में, उस क्षेत्र के स्कूल के लगभग ३८ अध्यापकों के लिये शिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। शिक्षा, अध्यापक की भूमिका, प्रारम्भिक व माध्यमिक स्कूल का पाठ्यक्रम, जीवन मूल्य, जीवन और उसका सही दृष्टिकोण, गणित पर आधारित मूल्यों की शिक्षा और मन को नियन्त्रित करना–इन सब विषयों पर चर्चा हुई।

७ सितम्बर को मूल्याधारित शिक्षा पर अभ्यासियों के लिये अनुस्थापन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसके बाद २१ और २२ सितम्बर को एक परिपूर्ण शिक्षण कार्यक्रम लगभग ६५ अभ्यासियों के लिये आयोजित किया गया। विभिन्न वार्ताओं को सुनने के साथ–साथ उन्हे मूल्य–आधारित खेलों व सामूहिक क्रियायें जैसे नाटक, गाना इत्यादि मे जोर–शोर से भाग लेने के लिये प्रोत्साहित किया गया। उन्हे इस बात की भी सूचना दी गयी कि स्कूलों मे कैसे अपनी पहुँच बनाई जाये और जो मूल्याधारित शिक्षा के बारे मे हम बताना चाहते है, उस पर कैसे चर्चा की जाये, कैसे कार्यक्रम का आयोजन किया जाये और उसके बाद कैसे उसके आगे की कार्यवाही की जाये।

२८ सितम्बर को मूल्याधारित शिक्षा पर ज़ोनल आश्रम मे ई और एल समूह के स्कूलों के साथ–साथ दूसरे स्कूलों के लिये भी एक सेमीनार का आयोजन हुआ। भाग लेने वाले अध्यापकों को भी आश्रम के रम्य वातावरण मे रहने का अवसर मिला। और कुछ ने यह भी कहा कि इस सत्र से उनके जीवन मे बदलाव आया है और जिस तरह से वह बच्चों और पाठ्यक्रम को सम्भालते है, उसमे भी इसका अच्छा प्रभाव पडेगा।

गाजियाबाद (यू. पी.)

आश्रम मे मूल्याधारित शिक्षा की कार्यशाला का आयोजन हुआ जिसमे स्थानीय कालेज के ७० बी. एड. के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसमे प्रधानाचार्य, विभाग के उच्च अधिकारी और कालेज के शिक्षकगण भी उपस्थित थे। इसमें मूल्यों की जरूरतों पर बल दिया गया और ध्यान के द्वारा मन (माइंड) को नियन्त्रित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

आत्मा के महत्व और मन की पवित्रता, मैं कौन हूँ और मानव शरीर में मनस की भूमिका, कैसे हम अपने मनस को आत्मा से जोडने के लिये इस्तेमाल कर सकते हैं और अपने आप को स्थूलता से छुटकारा पाने की जरूरत इत्यादि विषयों को लिया गया। विचारों को समझाने के लिये प्रत्यक्ष उदाहरणों का सहारा लिया गया।

मिशन और सहज मार्ग पद्दति के बारे मे संक्षिप्त परिचय दिया गया। ५ मिनट की प्रार्थना के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। विद्यार्थियों और शिक्षकों, दोनो ने इस कार्यक्रम को सराहा। इस कार्यक्रम का आयोजन बहन चन्द्रकांता और भाई अंकुर ने किया।

राँची में मूल्याधारित शिक्षा

सेंट अलाँयशियस स्कूल

निबंध प्रतियोगिता के परिणामस्वरूप २ सितम्बर को स्कूल के औडिटोरियम में एक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। स्कूल ने उस दिन छुट्टी की घोषणा कर दी थी ताकि मान्टेसरी, प्रारम्भिक व माध्यमिक वर्ग के शिक्षकगण बिना किसी बाधा के कार्यक्रम मे भाग ले सकें।

भाई अरुण कुमार लाल, सिल्वेस्टर सूरिन, स्कूल प्रधानाचार्य और भाई मनोज तिवारी, जो इस स्कूल के विद्यार्थी रह चुके है, ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होनें मिशन, एस एम एस एफ़, एस एम आर टी आई व वी बी एस ई (मूल्याधारित शिक्षा) जिसकी शुरूआत स्मृति से हुई थी, के बारे मे बताया।

अभ्यासी भाइयों और बहनों द्वारा मूल्याधारित कार्यक्रम के बाद भाई गिलबर्ट पिन्टो एस. जे. ने धन्यवाद देते हुए राँची केन्द्र के अभ्यासियों व मिशन को, कार्यशाला के लिये अति आभार प्रकट किया। वह विशेषरूप से यह देखकर काफ़ी प्रसन्न थे कि इस स्कूल के एक पूर्व विद्यार्थी, इस स्कूल के बच्चों की भलाई के लिये इतनी रूचि ले रहे हैं।

अरसलाइन स्कूल

इस बार मूल्याधारित कार्यक्रम जो सेंट अलाँयशियस स्कूल मे हुआ था उसकी प्रशंसा अरसलाइन बहनों तक पहुँच गयी और उन्होनें भाई मुकेश तनेजा को इसी तरह का एक कार्यक्रम अरसलाइन समुदाय के शिक्षकों के लिये आयोजित करने का निवेदन किया।

२७ सितम्बर को मूल्याधारित शिक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे मांन्टेसरी, प्रारम्भिक, माध्यमिक, इन्टर कालेज और दूसरे अरसलाइन संस्थान के लगभग १०० शिक्षकों ने भाग लिया। सेंट अळाँयशियस स्कूल के अनुभव के आधार पर इस कार्यक्रम को थोडा संक्षिप्त बनाया गया। इसमे शिक्षकों के साथ विचारों का आदान–प्रदान भी ज्यादा था।

मूल्याधारित शिक्षा का कार्यक्रम कम से कम २ स्कूलों मे नियमित रूप से शुरू हो जायेगा। इसके द्वारा श्री राम चन्द्र मिशन को बहुत बडा अवसर मिला है कि वह मालिक के कार्यक्रम को जनता तक पहुँचाये और बच्चों मे मूल्यों के समावेश का प्रयास करे।

बरौनी, बिहार

२९ सितम्बर, २००८ को बरौनी के अभ्यासियों, शिक्षको व बच्चों के लिये मूल्याधारित शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पटना केन्द्र के भाई डा. विजय कुमार ने वर्तमान शिक्षा पद्दति में मूल्यों की आज की स्थिति पर प्रकाश डालते हुये विषय का परिचय दिया। और बच्चों को मूल्याधारित शिक्षा देने के विभिन्न तरीकों के बारे में भी बताया। धनवाद केन्द्र की बहन दीप्ति ने प्रत्यक्ष उदाहरणों से दिखाया कि किस प्रकार विभिन्न प्रयोगों द्वारा मूल्याधारित शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

ओपन हाउस सत्र

बरौनी रिफ़ाइनरी ट्रेनी इंजीनियर

२० सितम्बर २००८ को आइ ओ सी एल रिफ़ाएनरी डिविज़न के ३० परिवीक्षाधीन इंजीनियरों के लिये तनाव प्रबंधन और आत्म विकास पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में रिफ़ाइनरी के वरिष्ठ अधिकारी सम्मिलित हुए । भाई प्रबोध संघवी ने ध्यान के द्वारा तनाव प्रबंधन पर वार्ता दी । "आत्म विकास के लिये ध्यान की प्रभावोत्पादकता" सत्र में डा. जी एम भटनागर ने बतलाया कि किस प्रकार सहज मार्ग पद्धति द्वारा अभ्यास आत्म विकास में सहायक है । बेगुसराय और निकटवर्ती केन्द्रों से बहुत से अभ्यासी इस कार्यशाला में उपस्थित थे ।

रामनगर, उत्तराखंड

वन संरक्षक भाई एन वी सिंह के आमंत्रण पर वन विभाग के ५२ कर्मचारी एक ओपन हाउस में उपस्थित हुए । मिशन के प्रशिक्षकों द्वारा "आध्यात्मिकता की पुकार पर दी गई वार्ताओं" को सभी ने बड़े ध्यान से सुना और उसके बाद हुई श्रोताओं की अंतः क्रिया से उनकी सहज मार्ग को और अधिक जानने में रुचि देखी जा सकती थी ।

उज्जैन

५ अक्तूबर को लगभग ११० लोग उज्जैन केन्द्र के भाईयों व बहनों के आमंत्रण पर एक ओपन हाउस में सम्मिलित हुए । ओपन हाउस की शुरुआत दो वार्ताओं से हुई "मनुष्य जीवन का ध्येय" और "साधना के मूल तत्व" । भाई संजय खंडेलवाल "मालिक और मिशन" के बारे में बोले ।

कार्यक्रम के अंत में भाई विकल्प मुंद्रा और भाई वाय जी जोशी ने एक प्रश्न–उत्तर सत्र का संचालन किया । लगभग ८० लोगों ने कार्यक्रम को सराहा तथा एस आर सी एम से जुड़ने की इच्छा ज़ाहिर की ।

अहमदाबाद

२८ सितम्बर को आयोजित किये गये ओपन हाउस सत्र का विषय था "ध्यान के द्वारा मन प्रबंधन" । इसमें इंजीनियरिंग विभाग के विद्यार्थियों को आमंत्रित किया गया । कार्यक्रम के उपरांत बहुत से विद्यार्थी अभ्यासी के रूप में मिशन से जुड़ गये ।

निरमा विश्वविद्यालय के खुले परिसर में निरमा विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के विभागीय सदस्यों के लिये तनाव प्रबंधन पर एक प्रस्तुतिकरण का आयोजन किया गया । इसके साथ ही तनाव मुक्त होने के लिये तथा कार्य कुशलता और प्रभावकारिता को बढ़ाने के लिये ध्यान की आवश्यकता के बारे में भी बताया गया ।

विभाग इससे बहुत प्रभावित हुआ तथा उन्होंने वक्ता को, जो मिशन के एक कार्यकर्ता हैं उनके फ़ांउडेशन डे समारोह का अध्यक्ष बनने तथा विद्यार्थियों को संबोधित करने के लिये आमंत्रित किया ।

बी एच इ एल, हैदराबाद

२० सितम्बर को "ध्यान के द्वारा मन को नियंत्रित करना" विषय पर आयोजित पूरे दिन के कार्यक्रम में सेंट ज़ेवियर्ज़ पी सी कॉलेज, स्कॉलर डिग्री कॉलेज और राव इंस्टीट्यूट ऑफ़ कॉमर्स के ७५ विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया । मिशन का ध्येय, युवकों के लिये ध्यान का महत्व और वैयक्तिक बदलाव से समाज में बदलाव इत्यादि विषयों पर प्रकाश डाला गया । संवादात्मक खेल, प्रश्नोत्तर सत्र और मालिक द्वारा दी गई वार्ता के कुछ अंश दिखाना इत्यादि ने सत्र को और रोचक बना दिया ।

३० सहभागियों ने अभ्यास शुरु करने में रुचि दिखाई । बी एच इ एल सेंटर के द्वारा प्रावेशिक सिटिंग तथा आगे की कार्यवाही का प्रबंध किया जा रहा है ।

सिबसागर, आसाम

२० सितम्बर को भाई सुधीर भारतिया द्वारा सिबसागर जिले में दो ओपन हाउस सत्रों का आयोजन किया गया । जिसमें जोरहाट, नज़ीरा और तिनसुकिया से अभ्यासी शामिल हुए । सुबह के सत्र में, कुछ पत्रकारों और शिक्षाविदों के अलावा अधिकतर मेहमान व्यावसायिक समुदाय से थे । शाम के सत्र में ऑयल इंडिया और प्लांटर परिवारों से १७ मेहमान उपस्थित थे । अगले दिन ९ लोगों ने प्रावेशिक सिटिंग ली ।

मसूरी, उत्तराखंड

मसूरी में देश के एक प्रमुख प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान–लाल बहादुर शास्त्री नेशनल अकैडमी ऑफ़ एडमिनिस्ट्रेशन में सहज मार्ग चर्चा में रहा । आइ ए एस के १९९५ बैच के मिड कोर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम में अप्रैल और मई २००८ में देशभर के ११० अफ़सरों ने भाग लिया । प्रशिक्षण के दौरान गंगटोक केन्द्र के भाई रविन्द्र तेलंग और भोपाल केन्द्र के भाई सचिन सिन्हा दोनों ने आइ ए एस का सदस्य होने के नाते अपने सहभागियों के साथ मालिक, मिशन और पद्धति के बारे में अनौपचारिक चर्चायें की। "ध्यान के द्वारा संतुलित जीवन– एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण" विषय पर एक औपचारिक प्रस्तुति और चर्चा का भी आयोजन किया गया ।

३१ मई २००८ को आइ ए एस के २००७ बैच के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिये भी एक इसी प्रकार के प्रस्तुतिकरण का आयोजन किया गया । योग, ध्यान तथा मानव मूल्यों और तनाव प्रबंधन पर होने वाले इसके लाभकारी प्रभाव जोकि जीवन को संतुलित बनाते हैं इसमें श्रोताओं ने बहुत रुचि दिखाई । समस्त रूप से २१ अफ़सरों और पारिवारिक सदस्यों जिसमें श्री लंकन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस का एक अफ़सर भी शामिल था ने दो मास के प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रावेशिक सिटिंग लेकर ध्यान आरम्भ कर दिया । वहाँ सत्संग का आयोजन किया गया, ३० अप्रैल बाबूजी महाराज के जन्म दिवस के दिन भी सत्संग हुआ । कुछ भाई सत्संग के लिये देहरादून आश्रम में भी गये । मालिक ने अपने संदेश में उनका स्वागत किया और उन्हें आशीर्वाद दिया तथा मिशन के कार्यकर्ताओं को आगे की कार्यवाही करने के लिये कहा ।

उत्तर कर्नाटक

वाडी में ओपन हाऊस

१७ अगस्त को रेलवे कॉलोनी मज़दूर यूनियन हॉल में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें २० लोग उपस्थित हुए। उनमें से अधिकतम रेलवे कर्मचारी थे। डा. गजेन्द्र सिंह ने हिंदी में मुख्य वार्ता दी तथा सहज मार्ग के विभिन्न पहलुओं के बारे में बताते हुए उन्हें सरल भाषा में समझाया। भाई राजू काशमपुरकर, सहज मार्ग के कई सूक्ष्म पहलुओं के बारे में बोले। वाडी के प्रशिक्षक भाई किशन राव देशपांडे ने सत्र का समापन किया। उसके बाद एक प्रोत्साहित करने वाला चर्चा सत्र हुआ। ५–६ लोगों ने अभ्यास शुरु करने की इच्छा जताई।

चितापुर

२४ अगस्त को विट्ठल मंदिर, चितापुर में एक सत्र का आयोजन किया गया। भाई राजू काशमपुरकर, कन्नड़ भाषा में हमारे मिशन तथा मालिक के बारे में बोले। फ़िर डा. गजेन्द्र सिंह ने हिंदी में मनुष्य जीवन के वास्तविक ध्येय और सहज मार्ग पद्धति के अभ्यास के बारे में बतलाया। अंत में भाई के नारायण राव ने, कन्नड़ भाषा में, आध्यात्मिक साधना शुरु करने की ज़रूरत और अत्यावश्यकता के बारे में बतलाया। सभी लोगों ने सारी वार्ताएं ध्यानपूर्वक सुनी। आखिर में उन्होंने कुछ प्रश्न पूछे जिनका स्पष्टीकरण दिया गया। कार्यक्रम का समापन चितापुर के प्रशिक्षक भाई मधुकर राव नाइक के सबका धन्यवाद दे कर किया।

गुलबर्गा में गृह–सभा

अगस्त में भाई महेश देशपांडे के घर पर एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें २०–२५ वर्ष की आयु के १० लोग शामिल हुए। डा. गजेन्द्र सिंह कन्नड़ में, और भाई श्रीकांत जोशी हिंदी में बोले। सहज मार्ग पद्धति की सादगी और प्रभावकारिता– कार्यक्रम के मुख्य विषय रहे। सभी ने सारी वार्ताएं ध्यानपूर्वक सुनी और अंत में प्रश्न पूछे। अनुक्रिया बहुत अच्छी रही। कार्यक्रम के दौरान घर में सूक्ष्म आध्यात्मिक वातावरण में पूज्य मालिक की उपस्थिति को महसूस किया गया।

कोप्पल

भाई जी एस कामथ और भाई राजू काशमपुरकर द्वारा २५ लोगों को मिशन के बारे में जानकारी दी गई। चर्चा के बाद येलबर्गा और कोप्पल के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। उसके पश्चात "हमारी साधना में कैसे सुधार किया जाये" और "हमारे केन्द्रों को कैसे बढ़ाया जाये" इन विषयों पर सामूहिक चर्चा हुई। कुल १० समूह बनाये गये। हरेक समूह लीडर ने अपने समूह द्वारा बताये गये विचारों का सार प्रस्तुत किया। विभिन्न केंद्रों जैसे कोप्पल, गंगावती, बेल्लारी, काम्पली–कोटल, येलबर्गा और हुबली से १३० अभ्यासी, एक दिवसीय कार्यक्रम में शामिल हुए। सभी अभ्यासियों ने बतलाया कि इस कार्यक्रम से उन्हें बहुत लाभ पँहुचा है।

निबंध लेखन

युनाएटेड नेशन्ज़ यूथ डे को मनाने के लिये संयुक्त राष्ट्र और एस आर सी एम के संयुक्त तत्वाधान में देश भर के स्कूलों, कॉलेजों और एस आर सी एम के आश्रमों में अखिल भारतीय निबंध–लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों और युवकों में मूल्यों का समावेश करना था जो कि उनके अंदर के प्रबल उत्साह, उर्जा, आदर्शवाद और खुली मानसिकता को और मज़बूत कर सके।

निबंध लेखन प्रतियोगिता में १०–२४ वर्ष की आयु के लगभग ७५,००० बच्चों व युवकों ने भाग लिया। कनिष्ठ वर्ग १०–१६ वर्ष की आयु के बच्चों के लिये निबंध का विषय था–"सत्य साहस है"। वरिष्ठ वर्ग १७–२४ वर्ष की आयु के युवकों ने "आत्म–सम्मान और आत्म–विश्वास चरित्र का निर्माण कर सकते हैं" विषय पर अपने विचार लिखे। निबंध अंग्रेज़ी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में लिखे गये। यह देखा गया कि न केवल विद्यार्थियों ने इसका आनंद लिया बल्कि स्वयं–सेवकों के लिये भी यह एक शिक्षाप्रद अनुभव रहा।

इस प्रतियोगिता में देश भर से विद्यार्थियों ने भाग लिया। उत्तर में पंचकुला के दून स्कूल और पंजाब विश्वविद्यालय से लेकर, दक्षिण में बहुत से स्कूलों ने इसमें भाग लिया। रांची में लगभग ६५०० विद्यार्थियों ने अंग्रेज़ी व हिंदी भाषा में निबंध लिखे।

जमशेदपुर, धनबाद, बोकारो, रामगढ़, लालपनिया, पटना, सिंदड़ी इत्यादि में भी निबंध प्रतियोगितायें आयोजित कीं गई जिसने बहुत से युवा विद्यार्थियों का दिल जीत लिया। कर्नाटक के, शिमोगा में, पांचवीं से दसवीं कक्षा के ५० नेत्रहीन विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह से भाग लिया। विद्यार्थियों ने विषयवस्तु लिखवायी और स्वयं सेवकों ने उसे लिखा।

निबंध प्रतियोगिता के बाद स्वयं सेवकों की आयोजन करने की कला में और निखार आया। इसके द्वारा विभिन्न केंद्रों के बहुत से अभ्यासियों को प्रेरित करने में सहायता मिली जिन्होंने संस्थानों में सम्पर्क करने, निरीक्षण करने और निबंधों को जाँचने का कार्य किया। प्राध्यापकों और अध्यापकों द्वारा अपने स्कूलों में इस प्रतियोगिता को आयोजित करने में दिखाई रुचि को देखना उनके लिये एक सुखद अनुभव था। बहुत से अध्यापकों और संस्थाओं के प्रधानों ने सहज मार्ग पद्धति के द्वारा ध्यान के बारे में पूछा तथा उनमें से कुछ ने अभ्यास शुरु करने की इच्छा ज़ाहिर की।

निबंध प्रतियोगिता के परिणाम नवम्बर माह के अंत तक घोषित किये जाएंगे। हर वर्ग के अंग्रेज़ी के तीन सबसे अच्छे निबंधों को ट्रॉफ़ी दी जायेगी। बाकी सभी भारतीय भाषाओं के तीन सबसे अच्छे निबंधों को पुस्तकें प्रदान की जायेंगी। जो प्रतिभागी ६०% या अधिक अंक प्राप्त करेंगे उन्हें श्रेष्ठता प्रमाण–पत्र दिये जायेंगे।

प्रकाश के केंद्र

प्रकाश का एक और केंद्र, निर्माणाधीन : सेवाश्रम, तिरुवनंतपुरम

तिरुवनंतपुरम, केरल की राजधानी में अरुविक्करा बांध के निकट एक सुंदर स्थल को आश्रम बनाने के किये चयनित किया गया है । मालिक, कई वर्ष पहले, बाबूजी महाराज के साथ इस शहर में उस समय के ट्रैवनकोर के महाराजा के मेहमान बनकर आये थे जब महाराजा और उनका परिवार सत्संग में शामिल हुआ करते थे । तिरुवनंतपुरम, अरबसागर और पश्चिमी घाट की संकीर्ण पट्टी पर स्थित है। वहाँ के अभ्यासी पिछले एक दशक से वहाँ पर आश्रम बनाने का सपना संजोए हुए थे । उनकी प्रार्थनाएं तब स्वीकार हुई जब मालिक ने १५ अप्रैल २००६ को केरल और तमिलनाडु के निकटवर्ती केन्द्रों से आये हज़ारों अभ्यासियों की उपस्थिति मे आश्रम की नींव रखी ।

१५ अप्रैल २००६ का दिन त्रिवेन्द्रम के अभ्यासियों द्वारा हमेशा याद रखा जायेगा । नींव की स्थापना करने के बाद पूज्य मालिक ने आश्रम स्थल पर अभ्यासियों को सत्संग करवाया तथा अपने अनमोल वचनों से नवाज़ा ।

आश्रम का क्षेत्र तीन एकड़ है तथा दो एकड़ भूमि साथ में संलग्न है जोकि अभ्यासियों के आवास के लिये है । यह स्थल तिरुवनंतपुरम रेलवे स्टेशन से १७ कि.मी. और हवाई अड्डे से २५ कि.मी. दूर स्थित है । साथ ही अरुविक्करा बांध है जिससे पूरे शहर को पानी उपलब्ध करवाया जाता है । आश्रम की भूमि बांध के जलग्रहण क्षेत्र में है तथा पेड़ों से पूरा भरा हुआ है । हरियाली से भरा हुआ विशालदर्शी दृश्य अपने आप में एक रोमंचकारी अनुभव है । पूज्य मालिक ने आश्रम का नाम "सेवाश्रम" रखा है । यह आश्रम तिरुवनंतपुरम–वेलानाद बस मार्ग के बायीं ओर स्थित है ।

आश्रम स्थल पर बनी हुई एक छोटी सी इमारत को फ़िलहाल एक अस्थायी ध्यान–कक्ष में परिवर्तित किया गया है जिसमें रविवार को सत्संग होता है । मालिक ने आश्रम की योजना को स्वीकृति दे दी है तथा अभी तलघर का कार्य पूरा किया जा रहा है ।

जैसा कि मालिक ने कहा है– आश्रम प्रकाश के केंद्र हैं वे अंधेरे को दूर करके दिव्य प्रकाश को फ़ैलाएंगे । हम सब उत्सुकता से पूज्य मालिक के द्वारा इस नये प्रकाश के केन्द्र का उद्घाटन होते देखने का इंतज़ार कर रहे हैं और हमें पूरा विश्वास है कि वो दिन दूर नहीं है ।

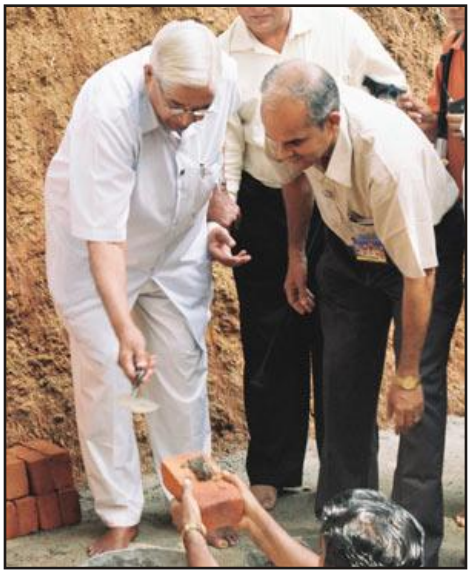

एस आर सी एम पहचान–पत्र (आई डी कार्ड)

मिशन में अभ्यासियों की पहचान के लिये दो प्रकार के कार्ड जारी किये जाते हैं । अभ्यासी के पास इन में से एक कार्ड का होना आवश्यक है ।

परिचय–पत्र (इन्ट्रोड्क्टरी कार्ड)

यह कार्ड तब जारी किया जाता है जब कोई अभ्यासी मिशन से जुड़ता है । यह कार्ड जारी की गई तारीख से एक वर्ष तक मान्य रहता है । इस कार्ड को प्राप्त करने के लिये अभ्यासी को इन्ट्रोड्क्टरी फ़ार्म भर के प्रशिक्षक को देना होता है ।

अभ्यासी–कार्ड

यह कार्ड अभ्यासी को यथाविधि छः माह अभ्यास करने के बाद जारी किया जाता है। इस कार्ड को प्राप्त करने के लिये :

– अभ्यासी के पास परिचय पत्र (इन्ट्रोड्क्टरी कार्ड) होना आवश्यक है ।
– अभ्यासी यथाविधि छः माह अभ्यास पूर्ण कर चुका हो ।
– प्रशिक्षक की सिफ़ारिश आवश्यक है ।
– पुराना अभ्यासी कार्ड खो जाने पर अभ्यासी पुनः अभ्यासी कार्ड के लिये आवेदन कर सकता है।

किसी और प्रकार का पहचान पत्र मान्य नही है । उपरोक्त कार्ड के लिये आवेदन करने के लिये या और किसी पूछ–ताछ के लिये अभ्यासी को लोकल सेंटर मेंबरशिप कोर्डिनेटर या सेंटर इंचार्ज से सम्पर्क करना चाहिये । लोकल सेंटर मेंबरशिप कोर्डिनेटर, नोडल सेंटर मेंबरशिप कोर्डिनेटर के साथ मिल कर काम करता है । आपके ज़ोनल इंचार्ज के पास आपके नोडल सेंटर मेंबरशिप कोर्डिनेटर से सम्पर्क करने की जानकारी है । बाकी सभी पूछताछ के लिये विवरण के साथ इस पते पर इमेल करें :in.idcard@srcm.org

To subscribe to this Newsletter please visit http://www.srcm.org/centers/as/in/newsletter/index.jsp
For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org

© 2008 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved.
"Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.
This message may be edited for content and is intended exclusively for the members of SRCM.